क्या याइरुस की बेटी की कहानी में बाइबल स्वयं से विरोध करती
है?

प्रश्न:

कुछ लोग कहते हैं कि याइरुस की बेटी की कहानी में बाइबल में विरोधाभास है। मरकुस 5:23 और लूका 8:42 में लिखा है कि बेटी मृत्यु के निकट थी, लेकिन मत्ती 9:18 में कहा गया है कि वह पहले ही मर चुकी थी। इनमें से सही कौन-सा विवरण है?

उत्तर:

बाइबल स्वयं से विरोधाभास नहीं करती। यह अंतर इसलिए दिखाई देता है क्योंकि हर सुसमाचार लेखक कहानी को अलग-अलग बिंदु से शुरू करता है। जब हम संदर्भ और पवित्रशास्त्र की प्रेरित प्रकृति को समझते हैं, तो यह विषय स्पष्ट हो जाता है।

बाइबल के पद क्या कहते हैं

मरकुस 5:23

“मेरी छोटी बेटी मरने पर है; तू आकर उस पर हाथ रख, कि वह चंगी
हो जाए और जीवित रहे।”

यहाँ याइरुस यीशु के पास तब आता है जब उसकी बेटी अभी जीवित है,

लेकिन उसकी हालत बहुत गंभीर है।

मरकुस 5:35–36

“तेरी बेटी मर गई; अब गुरु को क्यों कष्ट देता है?”
यीशु ने यह सुनकर याइरुस से कहा, “मत डर, केवल विश्वास रख।”

यहाँ स्पष्ट है कि याइरुस के यीशु से मिलने के बाद बेटी की मृत्यु का समाचार आया।

मत्ती 9:18

“मेरी बेटी अभी-अभी मर गई है; परन्तु तू आकर उस पर हाथ रख, तो वह जीवित हो जाएगी।”

मत्ती अपनी कथा उस बिंदु से आरंभ करता है जहाँ बेटी की मृत्यु हो चुकी है।

सुसमाचारों में कोई विरोधाभास नहीं

सभी सुसमाचार पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखे गए हैं (2 तीमुथियुस 3:16), इसलिए वे एक-दूसरे का विरोध नहीं करते। प्रत्येक लेखक अपने पाठकों के लिए कहानी के अलग-अलग पहलुओं पर ज़ोर देता है।

घटनाओं का क्रम (मरकुस का विवरण)

मरकुस पूरी समय-रेखा प्रस्तुत करता है:

बेटी मृत्यु के निकट थी
फिर उसकी मृत्यु हो गई
और अंत में यीशु ने उसे जीवित कर दिया

यह यीशु की मृत्यु पर पूर्ण सामर्थ्य को दर्शाता है और यूहन्ना 11:25–26 की प्रतिज्ञा को पूरा करता है:

यूहन्ना 11:25–26
“मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूँ; जो मुझ पर विश्वास करता है,
वह यदि मर भी जाए, तो भी जीवित रहेगा।”

विश्वास पर बल (मत्ती का विवरण)

मत्ती कहानी उस समय से शुरू करता है जब बेटी पहले ही मर चुकी होती है, ताकि यह दिखाया जा सके कि निराशाजनक समाचार के बावजूद याइरुस ने विश्वास बनाए रखा। यह यीशु के मृत्यु पर अधिकार और असंभव प्रतीत होने वाली परिस्थितियों में भी उस पर भरोसा करने की महत्ता को दर्शाता है (इब्रानियों 11:1)।

फिर विरोधाभास क्यों नहीं है?

याइरुस यीशु के पास तब आता है जब उसकी बेटी अभी जीवित है, पर मृत्यु के निकट है (मरकुस 5:23)।
यीशु के पहुँचने से पहले यह समाचार मिलता है कि बेटी मर गई है (मरकुस 5:35; मत्ती 9:18)।
मृत्यु का समाचार सुनने के बाद भी याइरुस यीशु पर विश्वास करता रहता है (मरकुस 5:36)।

इस प्रकार, दोनों विवरण एक ही घटना का वर्णन करते हैं, लेकिन कहानी के अलग-अलग क्षणों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

यह वचन हमें स्पष्ट रूप से दिखाता है कि यीशु को जीवन और मृत्यु

दोनों पर दिव्य अधिकार है, और यह हमें बुलाता है कि जब परिस्थितियाँ पूरी तरह निराशाजनक लगें, तब भी हम उस पर विश्वास रखें।

यदि आपने अभी तक यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार नहीं किया है, तो जान लें कि वह आज भी आपको बुला रहा है (प्रकाशितवाक्य 3:20)। उसके नाम में बपतिस्मा लेना (प्रेरितों के काम 2:38) पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा को प्राप्त करने का अगला कदम है।

Share on:
WhatsApp

Print this post